॥ श्री ॥

# सर्वार्थसिद्धि

SARVAARTHASIDDHI

**आ. पूज्यपाद** · ५वीं शती · अभिलेख २१/९०

आ. पूज्यपाद

## संक्षिप्त परिचय

आचार्य पूज्यपाद (देवनन्दि) कृत — तत्त्वार्थसूत्र की प्रथम उपलब्ध दिगम्बर संस्कृत टीका; प्रत्येक सूत्र के सर्व अर्थों की सिद्धि करने से यह नाम सार्थक है।

प्रसाद-गुण से भरी शैली के कारण आज भी तत्त्वार्थ-अध्ययन का मुख्य द्वार।

---

— सम्पादकीय परिचय; नीचे की तालिका-सामग्री मूल स्रोतों से अक्षरशः है। · Editorial summary; all list data is verbatim from the sources.

## अभिलेख-विवरण

सर्वार्थसिद्धि — दिगम्बर जैन सम्प्रदाय के ९० प्रमुख प्राचीन ग्रन्थों की कालानुक्रमिक सूची में क्रमांक २१ पर अंकित ग्रन्थ है। रचयिता आ. पूज्यपाद; रचना-काल ५वीं शती (लगभग)। आचार्य-समयानुक्रमणिका (क्रमांक ८९) के अनुसार इनका समय ४६४–५२४ है। वहाँ इनकी विशेषता/प्रधान कृति के रूप में "इष्टोपदेश सर्वार्थसिद्धि आदि" उल्लिखित है। इसी लेखनी से तत्त्वार्थवृत्ति, समाधितन्त्र, इष्टोपदेश, जैनेन्द्रव्याकरण भी इस सूची में सम्मिलित हैं। समकालीन ग्रन्थों में सिद्धिविनिश्चय, न्यायावतार परिगणित हैं।

इसी लेखनी से

तत्त्वार्थवृत्ति · समाधितन्त्र · इष्टोपदेश · जैनेन्द्रव्याकरण

समकालीन ग्रन्थ

सिद्धिविनिश्चय · न्यायावतार

सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़ें

जैन ग्रन्थ लाइब्रेरी ↗ · जैनकोश ↗ · Archive.org ↗

बाह्य ग्रन्थालयों में खोज — नई टैब में खुलेगी

प्रमाण: ९०-ग्रन्थ सूची-पोस्टर, पंक्ति २१ — मूल छायाचित्र

← तत्त्वार्थवृत्ति

समाधितन्त्र →